Aims, need and importance of Gender

जेण्डर (लिंग) अध्ययन के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व

(1) समाज का सन्तुलित विकास (Balanced development of society)

(2) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of Scientific view)

(3) अन्धविश्वासों का समापन (Abolition of blind faiths)

(4) स्वस्थ परम्पराओं का विकास (Development of healthy traditions)

(5) सामाजिक सुरक्षा का विकास (Development of Social Security)

(6) जागरूकता का विकास (Development of awareness)

(7) बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन (Motivation to girls education

(8) शिक्षा का सार्वभौमिकता (Universalisation of education

(9) सामाजिक समानता की स्थापना (Establishment of Social equality)

(10) पुरुष प्रधान समाज का उन्मूलन (Abolition of male dominant society)

जेण्डर अध्ययन के क्षेत्र
Fields of gender study.

1. परिवार (family)
2. जाति (caste)
3. धर्म (Religion)
4. संस्कृति (culture)
5. विद्यालय (School)
6. राजनीति (Politics)
7. प्रशासन (Administration)
8. व्यवसाय (Vocation)
9. सामाजिक स्वतन्त्रता (Social freedom)
10. सामाजिक समानता (Social equality)
11. कक्षा - कक्ष (classroom)
12. कार्य एवं व्यवहार (work and behaviour)
13. अनुशासन (Discipline)

Scanned with CamScanner

Development of Interdisciplinary discipline
अन्तः विषयों का विकास

अन्तः विषय शब्द का प्रयोग बीसवीं शताब्दी में किया गया था। इसकी अवधारणा ग्रीक दर्शन के आधार पर इतिहास से ली गई है। जूली थामसन क्लिन (Julie Thompson Kleen) के अनुसार, "इस अवधारणा की जड़ में बहुत से विचार स्थित थे जो परस्पर वार्तालाप के द्वारा समझ में आ रहे थे। ये विचार जो सर्वकालिक विज्ञान, सामान्य ज्ञान, विषयों के मिश्रण एवं ज्ञान के एकीकरण पर आधारित थे।" वास्तविकता यह है कि किसी भी उदारवादी मानवीय परियोजना से अन्तः विषय सम्मिलित होता है। इतिहास बताता है कि सत्रहवीं शताब्दी में भाषा, अर्थशास्त्र, प्रबन्धन, नैतिकता, कानून, दर्शन, राजनीति आदि में एक सार्वभौमिक व्यवस्था का निर्माण हुआ था।

परम्परागत अध्ययन विषय महत्वपूर्ण समस्याओं का समाधान करने में असमर्थ होते हैं। उसी में से अन्तः विषय प्रोग्राम क्रमशः उभरकर सामने आते हैं। उदाहरण के लिए - सामाजिक विज्ञान जैसे अध्ययन विषय से मानवशास्त्र (Anthropology) एवं समाजशास्त्र (Sociology) जैसे विषय उभरकर आए जिसमें बहुत कम सामाजिक विश्लेषण की तकनीकों पर बीसवीं शताब्दी में ध्यान दिया गया।

इसके परिणामस्वरूप बहुत से ~~सामाजिक~~ समाजशास्त्रियों ने तकनीकों में रुचि ली और विज्ञान एवं तकनीकी अध्ययन के कार्यक्रमों से जुड़ गए। इससे नए अनुसंधान विकास

क्षेत्र उभर कर आए जैसे – नैनो टैक्नोलॉजी जिसका पता दो या दो अधिक अध्ययन विषय वर्ग के उपयोगों के जुड़े बिना नहीं चल सकता है।

उदाहरण के लिए – जब हम किसी बीमारी की रोकथाम के लिए बहुत से विषयों का अध्ययन उच्च शिक्षा संस्थानों में करते हैं तो यह स्नातक कार्यक्रम अन्तः विषयों का अध्ययन कहलाता है। अन्तः विषय के अन्तर्गत किसी विशेष क्षेत्र में नुकसानदायक प्रभावों की अधिकता को दूर करने के रूप में का स्तर देखा जाता है।

इसमें एक ही विशेषज्ञ क्षेत्र की कमियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। अन्तः विषय में बिना विशेषज्ञ के एक क्षेत्र का अध्ययन किया जाता है। इसमें विश्लेषक की सलाह की आवश्यकता नहीं होती है। जब अन्तः विषय अनुसन्धान के परिणाम से समस्या का नया समाधान निकलता है तो यह जानकारी बहुत से विषयों को दी जाती है जो उससे जुड़े हैं।

Characteristics of Interdisciplinary Approach
अन्तः विषयक दृष्टिकोण की विशेषताएँ

(1) अन्तः विषयक उपागम छात्रों में जिज्ञासु प्रवृत्ति उत्पन्न करती है।
(2) छात्रों को चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है।
(3) छात्रों को बौद्धिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान कर आत्मविश्वास का विकास करती है।

Scanned with CamScanner

(4) छात्रों को व्यक्तिगत एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान कर आत्मविश्वास का विकास करती है।

(5) छात्रों को विषय ज्ञान और विषयों को अलग-2 दृष्टिकोण से समझने में सक्षम बनाता है।

(6) छात्रों को अधिगम, जीवन और काम के लिए कौशल के विकास में सहायता प्रदान करता है।

(7) एक साथ विभिन्न विषयों और अन्तः विषयक सम्बन्ध को समझने में सक्षम बनाता है।

(8) छात्रों में तुलनात्मक अध्ययन को बढ़ावा प्रदान करता है।

Need and Importance of Interdisciplinary approach

अन्तः विषयक दृष्टिकोण की आवश्यकता एवं महत्व

अन्तः विषय ज्ञान की आवश्यकता ज्ञान के विस्तार के कारण बढ़ गयी है। वर्तमान शैक्षणिक विषयों या व्यवसायों में अन्तः विषय ज्ञान सम्मिलित होता है। नया ज्ञान कोई नवीन वस्तु नहीं है। वह तो एक उभरता हुआ विषयगत वर्ग होता है। जीवन में व्यक्ति बहुत सी चुनौतियों का सामना करता है। प्रश्न यह है कि क्या नया ज्ञान इन चुनौतियों से लड़ने के लिए व्यक्ति को

सक्षम बनाता है या नहीं अथवा क्या यह नया ज्ञान चुनौतियों से निपटने के लिए उपयुक्त है। मौजूदा विषयगत पहलुओं के साथ एवं उपलब्ध ज्ञान की सहायता से इन उभरती हुई चुनौतियों को शायद पूरा नहीं किया जा सकता है और इन चुनौतियों को पूरा करने के लिए व्यक्ति को नए ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। क्योंकि व्यक्ति के जीवन में चुनौतियां बढ़ती जा रही हैं और उनको पूरा करना काफी कठिन होता जा रहा है।

Scanned with CamScanner

अंत: विषय ज्ञान और अनुसंधान महत्वपूर्ण है क्योंकि—

① रचनात्मकता के अवसर अंत: विषय ज्ञान की आवश्यकता होती है।

② अप्रवासी अवसर अपने नए क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

③ अध्ययन विषय अक्सर त्रुटियों को दोहराते हैं जिन्हें दो या दो से अधिक विषयों से परिचित लोगों द्वारा सबसे अच्छे से पता लगाया जा सकता है।

④ परंपरागत विषयों में अंतर के आधार पर अनुसंधान के कुछ महत्वपूर्ण विषय आते हैं।

⑤ कई बौद्धिक, सामाजिक, और व्यावहारिक समस्याओं के अंत: विषय दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

⑥ अंत: विषय ज्ञान और शोध हमें एकता - के - ज्ञान आदर्श को याद दिलाने के लिए कार्य करता है। अंत: विषय अपने शोध में अधिक लचीलेपन का आनंद लेते हैं।

⑦ अधिक संकीर्ण अध्ययन विषय की तुलना में अंत: विषयक प्रवृत्तियां अक्सर नए देशों में यात्रा करने के बौद्धिक समकक्षों के साथ स्वयं को पेश करती हैं।

⑧ अंत: विषयक आधुनिक अकादमी में ज्ञान संचार अंतराल को सहायता कर सकते हैं, जिससे बड़े सामाजिक समझदारी और न्याय के कारण अपने विशाल बौद्धिक संसाधनों को जुटाने में सहायता मिलती है।

⑨ विस्थापित विषयों को जोड़ने से, अंत: विषय शैक्षणिक स्वतंत्रता की रक्षा में भूमिका निभा सकते हैं।

Scanned with CamScanner